2014

HINDI

(Major)

Paper : 2.2

(Rītikālīn Kāvyadhārā)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

(क) 'उत्तर-मध्यकाल' नाम का उल्लेख किस काल के लिए किया जाता है?

(ख) किसकी मान्यता में चिंतामणि त्रिपाठी रीतिकाल के प्रवर्तक हैं?

(ग) किस कवि के लिए 'कठिन काव्य का प्रेत' आख्या का प्रयोग हुआ है?

(घ) केशव किसके दरबारी कवि थे?

(ङ) परंपरा के अनुसार 'बिहारी सतसई' का समाप्ति-काल क्या है?

(च) रीतिकालीन स्वच्छन्दधारा के एक प्रमुख कवि का नाम बताइए।

(छ) कवि सेनापति के गुरु कौन थे?

(ज) मतिराम की मृत्यु कब हुई थी?

(झ) भूषण रचित काव्यों की संख्या कितनी है?

(ञ) 'रीतिकाव्य-संग्रह' के सम्पादक कौन हैं?

2. अति संक्षेप में जवाब दीजिए : 2×5=10

(क) 'रसिक प्रिया' के रचयिता कौन हैं? यह किस कोटि का काव्य है?

(ख) "डारे ठोड़ी गाड़, गहि नैन-बटोही मारी"—इस काव्य-पंक्ति में किसके नेत्र का प्रसंग किस कवि ने छेड़ा है?

(ग) घनानन्द के नाम संबंधी और क्या-क्या शब्द मिलते हैं?

(घ) "तेरो तेज, सरजा समरथ दिनकर सो है"—यहाँ कवि भूषण ने किस उपमा से किसका सम्बोधन किया है?

(ङ) किसकी और किस मान्यता से सेनापति भक्त कवियों में गिने जा सकते हैं?

3. संक्षेप में उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) "क्षत्रिय ह्वै गुरु लोगन को प्रतिपाल करें"—सन्दर्भ का उल्लेख करते हुए यहाँ संकेतित क्षत्रिय-संबंधी विचारों के बारे में बताइए।

अथवा

पठित छन्दों के आधार पर केशव-रचित परशुराम प्रसंग के प्रतिपाद्य को व्यक्त कीजिए।

(ख) अन्योक्ति क्या है? कविवर बिहारी द्वारा रचित किसी एक अन्योक्तिपरक दोहे का उल्लेख कीजिए।

अथवा

"मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई"—यहाँ राधा को 'नागरि' क्यों कहा गया है?

(ग) घनानन्द के पदों में प्रयुक्त 'सुजान' शब्द का तात्पर्य समझाइए।

अथवा

घनानंद के काव्यों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(घ) "घरै तीनि बेर खातीं ते वै बीनि बेर खाती हैं"—प्रस्तुत पंक्ति में व्यंजित स्थिति का खुलासा कीजिए।

अथवा

मतिराम का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

4. अधोअंकित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×2=16

(क) सोभत दंडक की रुचि बनी। भाँतिन-भाँतिन सुन्दर घनी।
सेब बड़े नृप की जनु लसै। श्रीफल भूरि भाव जहँ बसै।
बेर भयानक सी अति लगै। अर्क समूह जहाँ जगमगै।
नैननि को बहुरूपनि ग्रसै। श्रीहरि की जनु मूरति लसै।।

अथवा

लाजनि लपेटी चितवनि भेद भाय भरी,
लसति ललित लोल-चख-तिरछानि मैं।
छवि को सदन गोरो बदन, रुचिर भाल,
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं।

(ख) पाँयनि नुपूर मंजु बजै
कटि किंकिनि में धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट-पीत,
हिये हुलसै बनमाल सुहाई।

अथवा

टूट्यो सिसुपाल बासुदेव जू सों बैर करि
टूटो है महिष दैत्य अधम बिचरते
राम कर छुवत ही टूट्यो ज्यों महेस चाप
टूटी पातसाही सिवराज संग लरते

5. आचार्यत्व और कवित्व की दृष्टि से केशवदास का विवेचन कीजिए। 12

अथवा

पठित दोहों के आधार पर 'बिहारी सतसई' की भाव एवं कलापक्षीय विशेषताओं का आकलन कीजिए।

6. रीतिकालीन शृंगारी कवि के रूप में देव पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। 12

अथवा

रीतिकालीन कवियों में भूषण का स्थान निर्धारित कीजिए।

★★★